Advanced International Journal for Research (AIJFR)

E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

बिहार एवं झारखंड में विकसित भारत 2047 लक्ष्यों की प्रगति एवं स्थिति

कृष्ण जी [1], डॉ प्रशांत कुमार [2]

[1]शोध छात्र, [2]सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर सह विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

सारांश

भारत सरकार ने वर्ष 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है, जिसे "विकसित भारत 2047" दृष्टि दस्तावेज द्वारा परिभाषित किया गया है। इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य की प्राप्ति में राज्यों की भूमिका निर्णायक है, क्योंकि विकास के विभिन्न सूचकांकों पर राज्यों की प्रगति ही भारत के समग्र विकास को सुनिश्चित करेगी। प्रस्तुत शोध पत्र में बिहार और झारखंड राज्यों की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में शासन व्यवस्था, वित्तीय विवेक, अवसंरचना विकास, सामाजिक–आर्थिक संकेतक, शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल सेवाएँ तथा सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति की दिशा में हुई प्रगति को विश्लेषित किया गया है। बिहार की स्थिति से स्पष्ट होता है कि राज्य शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार सृजन और डिजिटल अवसंरचना जैसे क्षेत्रों में अभी भी राष्ट्रीय औसत से पीछे है। नीति आयोग के SDG India Index (2023–24) में बिहार को केवल 57 अंक प्राप्त हुए, जो इसे देश के सबसे निचले पायदान वाले राज्यों में रखता है। साक्षरता दर (Census, 2011) मात्र 63.8% है, जबकि राष्ट्रीय औसत 74% है। वहीं प्रति व्यक्ति आय 2022–23 में ₹54,383 रही, जो राष्ट्रीय औसत ₹1,72,000 से काफी कम है। दूसरी ओर, झारखंड खनिज संसाधनों से समृद्ध होने के बावजूद संस्थागत सीमाओं और सामाजिक असमानताओं से जूझ रहा है। SDG Index (2023–24) में झारखंड का स्कोर 64 रहा, तथा राज्य की गरीबी दर (NITI Aayog, 2022) लगभग 42% है, जो भारत में सबसे अधिक है। शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों राज्यों में विकास की अपार संभावनाएँ हैं, किंतु इसके लिए वित्तीय स्वायत्तता को बढ़ाना, मानव संसाधन का सशक्तिकरण, डिजिटल सेवाओं का विस्तार तथा समावेशी विकास नीतियों का क्रियान्वयन अत्यावश्यक है। यदि बिहार और झारखंड लक्षित सुधारों को शीघ्रता से अपनाते हैं तो वे "विकसित भारत 2047" के राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

मुख्य शब्द – विकसित भारत 2047, सतत विकास लक्ष्य, विकास संकेतक, सामाजिक–आर्थिक, शासन एवं वित्तीय विवेक

प्रस्तावना

भारत सरकार ने वर्ष 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का संकल्प "विकसित भारत 2047" दृष्टि के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह लक्ष्य केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित न होकर सामाजिक न्याय, मानव विकास, सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति तथा समावेशी शासन व्यवस्था पर आधारित है। इस राष्ट्रीय लक्ष्य की सफलता में राज्यों की भूमिका अत्यंत निर्णायक है, क्योंकि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आधारभूत संरचना एवं सामाजिक कल्याण जैसी अधिकांश नीतियाँ राज्य–स्तर पर ही लागू होती हैं (नीतिआयोग, 2023–24)।

बिहार और झारखंड, भारत के पूर्वी भाग के दो महत्वपूर्ण राज्य हैं, जिनकी सामाजिक–आर्थिक संरचना ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं संस्थागत कारकों से प्रभावित रही है। बिहार जहाँ उच्च जनसंख्या दबाव, कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था और अपेक्षाकृत कम औद्योगिकीकरण से जूझ रहा है, वहीं झारखंड खनिज संसाधनों से समृद्ध होने के बावजूद गरीबी, क्षेत्रीय असमानता और कमजोर मानव विकास संकेतकों की समस्या से ग्रस्त है। जनगणना 2011 के अनुसार बिहार की साक्षरता दर मात्र 63.8% है, जो राष्ट्रीय औसत 74% से काफी कम है (Census of India, 2011)। इसी प्रकार, बिहार की प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2022–23 में लगभग ₹54,383 रही, जो राष्ट्रीय औसत से अत्यंत कम है (Economic Survey, 2023)।

दूसरी ओर, झारखंड की गरीबी दर लगभग 42% बताई गई है, जो देश में सर्वाधिक है, जबकि SDG India Index 2023–24 में झारखंड को 64 और बिहार को केवल 57 अंक प्राप्त हुए हैं (नीति आयोग, 2023–24)। ये आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि दोनों राज्यों की विकासात्मक स्थिति अभी भी राष्ट्रीय लक्ष्यों से पीछे है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में बिहार एवं झारखंड की प्रगति और चुनौतियों का तुलनात्मक अध्ययन "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की दिशा में न केवल प्रासंगिक बल्कि आवश्यक भी है, ताकि क्षेत्रीय असमानताओं को कम कर संतुलित एवं समावेशी राष्ट्रीय विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

साहित्य समीक्षा

भारत में क्षेत्रीय असमानताओं, राज्य–स्तरीय विकास और सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन पर विस्तृत साहित्य उपलब्ध है। प्रारंभिक स्तर पर मिर्डाल (1968) ने संचयी कारण सिद्धांत (Cumulative Causation Theory) के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि विकास की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से असमान होती है, जिसके कारण पिछड़े क्षेत्र समय के साथ और अधिक पिछड़ जाते हैं। इस अवधारणा को भारतीय संदर्भ में हिर्शमैन (1958) तथा फ्राइडमैन (1966) ने आगे बढ़ाया और यह दर्शाया कि विकास का लाभ सीमित क्षेत्रों तक सिमट जाता है।

भारतीय राज्यों के तुलनात्मक विकास पर दत्त और महाजन (2010) तथा रुद्र दत्त (2012) ने अपने अध्ययनों में आय, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में व्यापक अंतर को रेखांकित किया है। बिहार और झारखंड जैसे पूर्वी भारतीय राज्यों पर केंद्रित अध्ययनों में कुमार (2015) और सिंह (2017) ने बताया कि उच्च जनसंख्या दबाव, कमजोर औद्योगिक आधार और सीमित मानव पूंजी विकास इन राज्यों की प्रमुख समस्याएँ हैं। झारखंड के संदर्भ में कई विद्वानों ने यह भी उल्लेख किया है कि खनिज संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद संस्थागत कमजोरी, आदिवासी क्षेत्रों की उपेक्षा और सामाजिक असमानता विकास को बाधित करती है।

हाल के वर्षों में नीति आयोग द्वारा प्रकाशित SDG India Index (2021–2024) ने सतत विकास लक्ष्यों के आधार पर राज्यों की प्रगति का व्यवस्थित आकलन प्रस्तुत किया है। इन रिपोर्टों के अनुसार बिहार और झारखंड दोनों ही शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन और आर्थिक समावेशन जैसे लक्ष्यों में राष्ट्रीय औसत से पीछे हैं (NITI Aayog, 2023–24)। इसके अतिरिक्त विश्व बैंक (2020) और UNDP (2022) की रिपोर्टों में यह स्पष्ट किया गया है कि मानव विकास, डिजिटल अवसंरचना और सुशासन को सुदृढ़ किए बिना समावेशी एवं सतत विकास संभव नहीं है। मुंढे (2024) "Viksit Bharat @2047: Pathways to a Developed India" में भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने हेतु बहुआयामी रणनीतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन आर्थिक विकास, तकनीकी नवाचार, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय स्थिरता पर बल देते हुए नीति सुधारों व मानव पूंजी निवेश की आवश्यकता को रेखांकित करता है। दान (2024) "विकसित भारत @2047: भारत के सतत विकास के लिए एक दृष्टिकोण" में भारत को स्वतंत्रता की शताब्दी तक विकसित राष्ट्र बनाने की परिकल्पना प्रस्तुत की गई है। अध्ययन सतत आर्थिक वृद्धि, सामाजिक समावेशन, तकनीकी नवाचार, कौशल विकास और पर्यावरण संरक्षण को समन्वित विकास के प्रमुख स्तंभ

मानता है। कौर भाटिया एवं सिंघल (2024) "एक सशक्त भारत की ओररू विकसित भारत 2047 विजन को साकार करने में महिलाओं की भूमिका" में विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में महिला सशक्तिकरण की केंद्रीय भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन शिक्षा, स्वास्थ्य, कार्यबल भागीदारी और ळल।छ ढांचे के माध्यम से समावेशी व सतत राष्ट्रीय विकास पर बल देता है।

समग्र रूप से साहित्य समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि बिहार और झारखंड में विकास की संभावनाएँ पर्याप्त हैं, किंतु ऐतिहासिक पिछड़ापन, संरचनात्मक बाधाएँ और नीतिगत क्रियान्वयन की कमजोरियाँ इनके विकास को सीमित कर रही हैं। उपलब्ध अध्ययनों में "विकसित भारत 2047" के दीर्घकालिक राष्ट्रीय लक्ष्य के संदर्भ में इन राज्यों की भूमिका पर सीमित विश्लेषण किया गया है, जिससे यह शोध वर्तमान साहित्य में एक महत्वपूर्ण रिक्तता को भरने का प्रयास करता है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन के लिए बिहार तथा झारखंड को चयनित किया गया है, जो भारत के पूर्वी भाग में स्थित दो पड़ोसी राज्य हैं, किंतु भौगोलिक, जनसांख्यिकीय एवं आर्थिक दृष्टि से एक–दूसरे से भिन्न हैं। बिहार गंगा नदी के विस्तृत मैदानी क्षेत्र में अवस्थित है, जहाँ समतल स्थलाकृति, उपजाऊ जलोढ़ मृदा और सिंचाई की सापेक्ष उपलब्धता कृषि विकास के अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं। जनगणना 2011 के अनुसार बिहार की जनसंख्या लगभग 10. 4 करोड़ है तथा जनसंख्या घनत्व 1,106 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है, जो देश में सर्वाधिक में से एक है। राज्य की लगभग 89ः जनसंख्या ग्रामीण है, जबकि साक्षरता दर केवल 63.8% दर्ज की गई है, जो राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। उच्च जनसंख्या दबाव, सीमित औद्योगिक आधार और कम प्रति व्यक्ति आय (2022–23 में लगभग ₹54,383) बिहार के विकास को चुनौतीपूर्ण बनाते हैं।

इसके विपरीत, झारखंड छोटानागपुर पठार का हिस्सा है, जिसकी स्थलाकृति पठारी, वनाच्छादित और खनिज संसाधनों से भरपूर है। जनगणना 2011 के अनुसार झारखंड की कुल जनसंख्या लगभग 3.3 करोड़ है तथा जनसंख्या घनत्व 414 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है, जो बिहार की तुलना में काफी कम है। राज्य में अनुसूचित जनजातियों की भागीदारी लगभग 26% है, जो इसकी सामाजिक संरचना को विशिष्ट बनाती है। झारखंड कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट एवं अन्य खनिजों से समृद्ध होने के बावजूद गरीबी और असमान विकास की समस्या से जूझ रहा है; नीति आयोग (2022) के अनुसार यहाँ गरीबी दर लगभग 42% है।

इस प्रकार, जहाँ बिहार कृषि–प्रधान, घनी आबादी वाला और श्रम–आधारित अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं झारखंड संसाधन–समृद्ध किंतु सामाजिक एवं संस्थागत चुनौतियों से ग्रस्त राज्य है। दोनों राज्यों की भौगोलिक संरचना, संसाधन आधार और जनसांख्यिकीय विशेषताओं में यह स्पष्ट अंतर इनके विकास के पैटर्न को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इसी कारण "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य के संदर्भ में इन दोनों राज्यों का तुलनात्मक अध्ययन विशेष महत्व रखता है।

चित्र संख्या 1 – बिहार एवं झारखण्ड : अवस्थिति मानचित्र

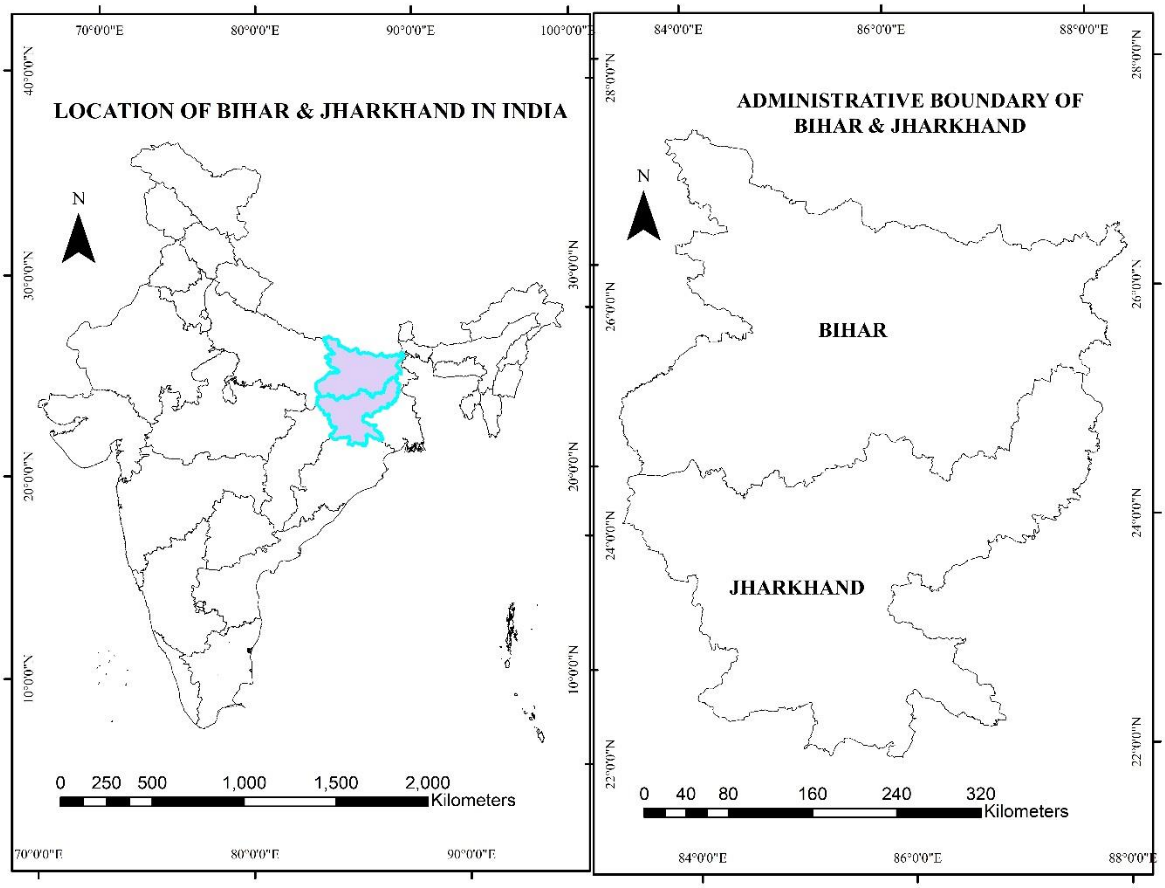

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- बिहार और झारखंड की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- शिक्षा, स्वास्थ्य, आय, डिजिटल अवसंरचना एवं शासन संकेतकों के आधार पर राज्यों की प्रगति का मूल्यांकन करना।
- SDG India Index के माध्यम से सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा का आकलन करना।
- "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य में इन राज्यों की भूमिका और संभावनाओं को रेखांकित करना।

आँकड़ों के स्रोत एवं शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिनका संकलन विश्वसनीय एवं आधिकारिक सरकारी स्रोतों से किया गया है। अध्ययन में जनसंख्या, साक्षरता, सामाजिक–आर्थिक संरचना तथा विकास स्तर के आकलन हेतु जनगणना भारत 2011 के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए नीति आयोग द्वारा प्रकाशित SDG India Index (2023–24) को प्रमुख आधार बनाया गया है। इसके अतिरिक्त, आय, गरीबी, राज्य की आर्थिक स्थिति तथा विकास प्रवृत्तियों से संबंधित सूचनाएँ राज्य आर्थिक सर्वेक्षण एवं राष्ट्रीय नमूना सर्वे (NSS) की विभिन्न रिपोर्टों से प्राप्त की गई हैं।

शोध पद्धति के अंतर्गत तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसके माध्यम से बिहार एवं झारखंड राज्यों की विकासात्मक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। साक्षरता दर, प्रति व्यक्ति आय, गरीबी दर तथा SDG स्कोर जैसे चयनित सामाजिक–आर्थिक संकेतकों के आधार पर दोनों राज्यों की प्रगति, असमानताओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। इस विधि से "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य के संदर्भ में राज्यों की वर्तमान स्थिति और संभावनाओं को स्पष्ट रूप से समझने का प्रयास किया गया है।

सामाजिक–आर्थिक संकेतकों का तुलनात्मक विश्लेषण

किसी भी क्षेत्र या राज्य की समग्र विकासात्मक स्थिति को समझने का एक वैज्ञानिक एवं प्रभावी माध्यम है, क्योंकि ये संकेतक न केवल आर्थिक प्रगति को दर्शाते हैं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, आय स्तर, गरीबी और जीवन गुणवत्ता जैसे मानवीय पक्षों को भी उजागर करते हैं। विभिन्न राज्यों के बीच इन संकेतकों की तुलना से विकास की असमानताओं, क्षेत्रीय विषमताओं तथा नीतिगत प्रभावों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। इसी संदर्भ में बिहार और झारखंड जैसे सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से संवेदनशील राज्यों का तुलनात्मक विश्लेषण "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की दिशा में उनकी वर्तमान स्थिति, प्रगति की गति और भविष्य की संभावनाओं को समझने हेतु अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

- **शिक्षा एवं साक्षरता**

शिक्षा एवं साक्षरता किसी भी क्षेत्र के समग्र सामाजिक–आर्थिक विकास की मूल आधारशिला मानी जाती है, क्योंकि शिक्षा मानव संसाधन को कुशल, जागरूक एवं उत्पादक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साक्षरता का स्तर किसी राज्य की विकासात्मक क्षमता, जीवन–स्तर, रोजगार के अवसरों तथा सामाजिक समानता को प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिंबित करता है। उच्च साक्षरता न केवल आर्थिक प्रगति को गति प्रदान करती है, बल्कि स्वास्थ्य, जनसंख्या नियंत्रण, लैंगिक सशक्तिकरण एवं सामाजिक सहभागिता जैसे क्षेत्रों में भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। इसलिए बिहार एवं झारखंड जैसे विकासात्मक चुनौतियों से जूझ रहे राज्यों में शिक्षा एवं साक्षरता की स्थिति का विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की दिशा में मानव पूंजी विकास की वास्तविक स्थिति और संभावनाओं को समझा जा सके।

तालिका–1 : बिहार एवं झारखंड में साक्षरता स्तर का तुलनात्मक स्वरूप

	बिहार		झारखंड		भारत	
	2001	2011	2001	2011	2001	2011
कुल साक्षरता (%)	47.0	63.8	53.6	67.6	64.8	74.0
पुरुष साक्षरता (%)	60.3	73.4	67.9	78.5	75.3	82.1
महिला साक्षरता (%)	33.6	53.3	38.9	56.2	53.7	65.5

स्रोत – जनगणना भारत, 2001 एवं 2011

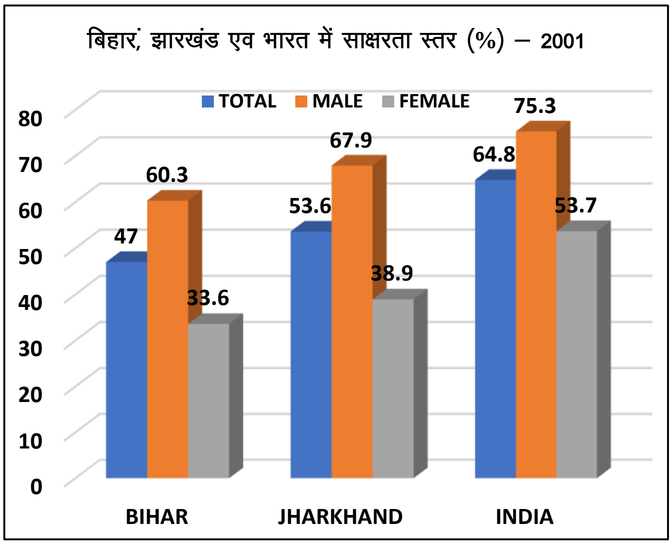

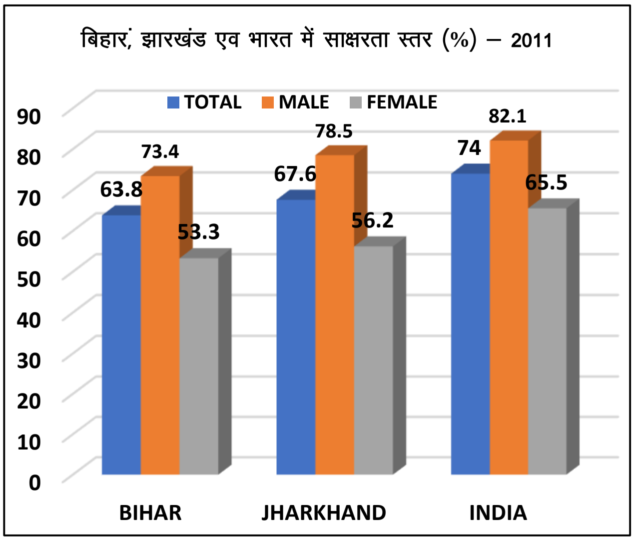

तालिका–1 का विश्लेषण यह दर्शाता है कि वर्ष 2001 से 2011 के बीच बिहार एवं झारखंड दोनों राज्यों में साक्षरता स्तर में संख्यात्मक वृद्धि अवश्य हुई है, किंतु यह वृद्धि गुणात्मक दृष्टि से राष्ट्रीय अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं रही। बिहार में कुल साक्षरता दर का 47.0% से बढ़कर 63.8% होना शिक्षा के प्रसार और सरकारी प्रयासों की आंशिक सफलता को दर्शाता है, परंतु यह भी स्पष्ट करता है कि प्रारंभिक आधार अत्यंत कमजोर था। विशेष रूप से महिला साक्षरता में तीव्र वृद्धि के बावजूद पुरुष–महिला साक्षरता अंतर का बने रहना सामाजिक संरचनात्मक असमानताओं, निर्धनता तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक पहुँच की सीमाओं को इंगित करता है।

झारखंड के संदर्भ में साक्षरता वृद्धि अपेक्षाकृत बेहतर दिखाई देती है, किंतु आदिवासी बहुल एवं दुर्गम क्षेत्रों में शिक्षा की भौतिक उपलब्धता, शिक्षकों की कमी तथा सामाजिक–आर्थिक पिछड़ापन साक्षरता स्तर को सीमित करते हैं। दोनों राज्यों की साक्षरता दर का राष्ट्रीय औसत से नीचे रहना यह संकेत देता है कि शिक्षा में मात्र नामांकन वृद्धि पर्याप्त नहीं है, बल्कि गुणवत्ता, निरंतरता और क्षेत्रीय संतुलन पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इस प्रकार, शिक्षा एवं साक्षरता की यह स्थिति "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य के संदर्भ में मानव पूंजी विकास की एक प्रमुख बाधा के रूप में उभरती है, जिसे दूर करने हेतु दीर्घकालिक, लक्षित एवं समावेशी शैक्षिक नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन अनिवार्य है।

- **स्वास्थ्य एवं जीवन–स्तर**

स्वास्थ्य एवं जीवन–स्तर किसी भी समाज के मानव विकास का मूल आधार होते हैं, क्योंकि ये सीधे तौर पर कार्य–क्षमता, उत्पादकता तथा समग्र जीवन–गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। किसी राज्य की स्वास्थ्य स्थिति वहाँ उपलब्ध चिकित्सा अवसंरचना, पोषण स्तर, स्वच्छता, सुरक्षित पेयजल तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता को प्रतिबिंबित करती है। बिहार एवं झारखंड जैसे विकासशील राज्यों में स्वास्थ्य संकेतकों का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक हो जाता है, क्योंकि यहाँ गरीबी, कुपोषण और सीमित स्वास्थ्य सुविधाएँ जीवन–स्तर को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं।

तालिका–2 : बिहार एवं झारखंड में स्वास्थ्य एवं जीवन–स्तर के प्रमुख संकेतक

	बिहार		झारखंड		भारत
	2001	2011	2001	2011	2011
शिशु मृत्यु दर (IMR प्रति 1000 जीवित जन्म)	67	44	69	39	40
मातृ मृत्यु दर (MMR प्रति 1 लाख जीवित जन्म)	312	219	371	261	212
जीवन प्रत्याशा (वर्ष)	62.5	65.8	61.2	64.3	67.3
कुपोषित बच्चे (%)	58	48	54	46	35

स्रोत : SRS, NFHS, जनगणना एवं राज्य स्वास्थ्य प्रोफाइल – संकलित

तालिका–2 से यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 2001 से 2011 के बीच बिहार एवं झारखंड दोनों राज्यों में स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार दर्ज किया गया है, किंतु यह सुधार राष्ट्रीय औसत की तुलना में अपेक्षाकृत धीमा रहा है। बिहार में शिशु मृत्यु दर 67 से घटकर 44 हुई, जो स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार का संकेत देती है, परंतु यह दर अभी भी राष्ट्रीय औसत (40) से अधिक है। इसी प्रकार, मातृ मृत्यु दर में कमी के बावजूद बिहार का स्तर सुरक्षित मातृत्व सेवाओं की सीमित उपलब्धता को दर्शाता है।

झारखंड में शिशु मृत्यु दर में अपेक्षाकृत अधिक गिरावट दिखाई देती है, किंतु मातृ मृत्यु दर तथा कुपोषण की स्थिति अब भी चिंताजनक बनी हुई है। दोनों राज्यों में जीवन प्रत्याशा राष्ट्रीय औसत से कम रहना यह दर्शाता है कि पोषण, स्वच्छता, पेयजल एवं प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं में संरचनात्मक सुधार की आवश्यकता बनी हुई है। समग्र रूप से देखा जाए तो दोनों राज्यों में स्वास्थ्य संकेतकों की कमजोरी न केवल मानव विकास सूचकांक को नीचे खींचती है, बल्कि शिक्षा और आर्थिक उत्पादकता पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है। "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि स्वास्थ्य अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण, पोषण एवं स्वच्छता कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन तथा ग्रामीण–आदिवासी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित की जाए, जिससे जीवन–स्तर में सतत सुधार संभव हो सके।

- **आय एवं गरीबी**

आय स्तर और गरीबी की स्थिति किसी भी राज्य की आर्थिक संरचना, जीवन–स्तर तथा विकास की वास्तविक दिशा को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है। प्रति व्यक्ति आय जहाँ आर्थिक अवसरों, उत्पादकता और रोजगार की उपलब्धता को दर्शाती है, वहीं गरीबी दर सामाजिक असमानता, संसाधनों की पहुँच और विकास के लाभों के वितरण को उजागर करती है। बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में आय एवं गरीबी का विश्लेषण इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ये दोनों ही राज्य ऐतिहासिक रूप से आर्थिक पिछड़ेपन और संरचनात्मक सीमाओं से प्रभावित रहे हैं।

तालिका–3 : बिहार एवं झारखंड में आय एवं गरीबी से संबंधित प्रमुख संकेतक

राज्य	वर्ष	प्रति व्यक्ति आय (₹)	गरीबी दर (%)
बिहार	2001–02	7,914	42.6
	2011–12	18,918	33.7
	2022–23	54,383	~25
झारखंड	2001–02	9,921	45.3
	2011–12	36,370	36.9
	2022–23	86,000 (लगभग)	~42
भारत	2022–23	1,72,000	~16

स्रोत – राज्य आर्थिक सर्वेक्षण, NITI Aayog, NSS – संकलित

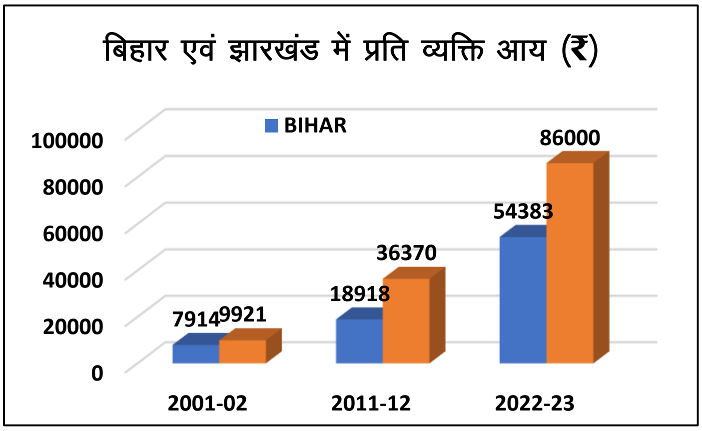

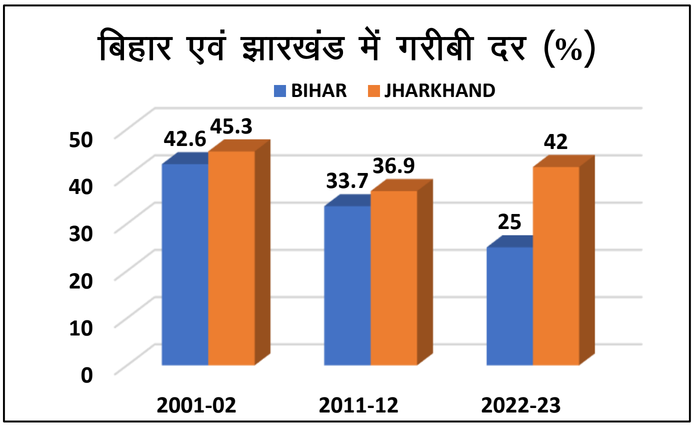

तालिका–3 के आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि बिहार और झारखंड दोनों राज्यों में समय के साथ प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि अवश्य हुई है, किंतु यह वृद्धि राष्ट्रीय औसत की तुलना में अत्यंत धीमी रही है। बिहार की प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2022–23 में केवल ₹54,383 रही, जो राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। यह स्थिति राज्य की कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था, सीमित औद्योगिक विकास तथा बड़े पैमाने पर श्रमिक प्रवासन को दर्शाती है।

झारखंड की प्रति व्यक्ति आय बिहार से अधिक होने के बावजूद गरीबी दर का उच्च बना रहना इस तथ्य को उजागर करता है कि खनिज संसाधनों और औद्योगिक गतिविधियों का लाभ समाज के व्यापक वर्ग तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है। विशेषकर आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की निरंतरता क्षेत्रीय असमानता और कमजोर समावेशी नीतियों की ओर संकेत करती है। समग्र रूप से देखा जाए तो आय में वृद्धि के बावजूद गरीबी का बने रहना यह दर्शाता है कि विकास की प्रक्रिया अभी तक पर्याप्त रूप से समावेशी नहीं हो सकी है। "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु यह आवश्यक है कि दोनों राज्यों में रोजगार–सृजन, औद्योगिक विविधीकरण तथा लक्षित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।

SDG India Index के संदर्भ में विश्लेषण

सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals – SDGs) के आधार पर राज्यों की विकासात्मक प्रगति का आकलन करने हेतु SDG India Index एक महत्वपूर्ण मानक के रूप में उभरा है, जिसे नीति आयोग द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित किया जाता है। यह सूचकांक गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, स्वच्छता, स्वच्छ ऊर्जा, आर्थिक वृद्धि तथा संस्थागत सुदृढ़ता जैसे बहुआयामी संकेतकों के माध्यम से राज्यों के प्रदर्शन का तुलनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

SDG India Index 2023–24 के अनुसार बिहार को 57 अंक प्राप्त हुए हैं, जिससे यह देश के सबसे निम्न प्रदर्शन करने वाले राज्यों की श्रेणी में आता है। यह स्थिति विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन तथा आधारभूत सुविधाओं से संबंधित लक्ष्यों में धीमी प्रगति को दर्शाती है। इसके विपरीत, झारखंड का स्कोर 64 अंक रहा है, जो बिहार की तुलना में कुछ बेहतर है, किंतु अभी भी राष्ट्रीय अपेक्षाओं से काफी पीछे है। झारखंड में गरीबी, पोषण असुरक्षा, आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सीमित पहुँच जैसे कारक SDG लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रमुख बाधा बने हुए हैं।

समग्र रूप से SDG India Index का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि बिहार और झारखंड दोनों राज्यों में सतत विकास की दिशा में प्रगति असमान और अपेक्षाकृत धीमी रही है। इन राज्यों का निम्न स्कोर यह संकेत देता है कि केवल आर्थिक वृद्धि पर्याप्त नहीं है, बल्कि समावेशी नीतियों, मानव संसाधन विकास, डिजिटल सेवाओं के विस्तार तथा सुशासन के सुदृढ़ीकरण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए SDG लक्ष्यों का समयबद्ध एवं प्रभावी क्रियान्वयन इन दोनों राज्यों के लिए अत्यंत अनिवार्य है।

विकसित भारत 2047" के संदर्भ में संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

"विकसित भारत 2047" का लक्ष्य भारत को आर्थिक रूप से समृद्ध, सामाजिक रूप से समावेशी तथा पर्यावरणीय दृष्टि से सतत राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की परिकल्पना प्रस्तुत करता है। इस राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति में बिहार और झारखंड जैसे राज्यों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन राज्यों की विकासात्मक प्रगति सीधे तौर पर देश के समग्र विकास को प्रभावित करती है। दोनों राज्यों में विकास की अनेक संभावनाएँ विद्यमान हैं, परंतु इनके साथ–साथ कई संरचनात्मक और नीतिगत चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

संभावनाओं की दृष्टि से बिहार में विशाल युवा जनसंख्या, प्रचुर श्रम–शक्ति तथा कृषि एवं सेवा क्षेत्र में विकास की व्यापक संभावनाएँ उपलब्ध हैं। यदि शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार–सृजन पर प्रभावी निवेश किया जाए, तो यह राज्य मानव संसाधन के माध्यम से राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। दूसरी ओर, झारखंड खनिज संसाधनों, वन संपदा तथा औद्योगिक संभावनाओं से समृद्ध है, जो इसे औद्योगिक एवं अवसंरचनात्मक विकास का प्रमुख केंद्र बना सकती हैं।

हालाँकि, इन संभावनाओं के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। बिहार में उच्च जनसंख्या दबाव, सीमित औद्योगिकीकरण, कम प्रति व्यक्ति आय तथा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की अपर्याप्तता विकास की गति को बाधित करती है। झारखंड में खनिज संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद गरीबी, क्षेत्रीय असमानता, आदिवासी समुदायों का सामाजिक–आर्थिक पिछड़ापन तथा संस्थागत कमजोरियाँ प्रमुख समस्याएँ बनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त, दोनों राज्यों में शासन व्यवस्था की प्रभावशीलता, वित्तीय स्वायत्तता तथा डिजिटल अवसंरचना की सीमाएँ भी विकासात्मक प्रयासों को प्रभावित करती हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु बिहार और झारखंड में लक्षित सुधार, समावेशी नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन, मानव संसाधन का सशक्तिकरण तथा क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना अत्यंत आवश्यक है। यदि इन चुनौतियों का समाधान योजनाबद्ध एवं समयबद्ध रूप से किया जाता है, तो दोनों राज्य न केवल अपनी आंतरिक विकासात्मक समस्याओं से उबर सकते हैं, बल्कि राष्ट्रीय विकास यात्रा में भी सशक्त योगदान दे सकते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि बिहार एवं झारखंड जैसे राज्य "विकसित भारत 2047" के राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं, किंतु वर्तमान सामाजिक–आर्थिक वास्तविकताएँ इस मार्ग में गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, आय और गरीबी जैसे मूलभूत संकेतकों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि यद्यपि दोनों राज्यों में समय के साथ सुधार हुआ है, फिर भी उनकी प्रगति राष्ट्रीय औसत से पीछे बनी हुई है। विशेष रूप से मानव पूंजी विकास की कमजोर स्थिति और क्षेत्रीय असमानताएँ विकास की गति को सीमित कर रही हैं। SDG India Index में बिहार और झारखंड का अपेक्षाकृत निम्न प्रदर्शन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि केवल आर्थिक वृद्धि पर्याप्त नहीं है, बल्कि समावेशी, संतुलित और सतत विकास पर केंद्रित नीतिगत

हस्तक्षेप अनिवार्य हैं। बिहार में युवा जनसंख्या और श्रम–शक्ति तथा झारखंड में प्राकृतिक एवं खनिज संसाधनों की प्रचुरता जैसी संभावनाएँ तभी सार्थक सिद्ध होंगी, जब शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, सुशासन और डिजिटल अवसंरचना को समानांतर रूप से सुदृढ़ किया जाए। समग्र रूप से यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि "विकसित भारत 2047" की परिकल्पना तभी साकार हो सकती है, जब क्षेत्रीय विषमताओं को कम कर राज्यों को विकास की समान अवसर–संरचना प्रदान की जाए। बिहार और झारखंड में लक्षित सुधार, मानव संसाधन का सशक्तिकरण और सतत विकास लक्ष्यों का प्रभावी क्रियान्वयन न केवल इन राज्यों की विकासात्मक दिशा को परिवर्तित करेगा, बल्कि भारत को एक समावेशी, सुदृढ़ और विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की प्रक्रिया को भी गति प्रदान करेगा।

संदर्भ

1. राम, आर. (2025). विकसित भारत @2047: प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), 13(5)
2. सिंह, विमलेश. (2025). विकसित भारत @2047 के लक्ष्य प्राप्ति में एक प्रगतिशील एवं समावेशी शिक्षा प्रणाली की अनिवार्यता. अभिगम, 34
3. Census of India. (2001). Primary Census Abstract. Registrar General & Census Commissioner, India.
4. Census of India. (2011). Primary Census Abstract. Registrar General & Census Commissioner, India.
5. Dan, I. (2024). Viksit Bharat @2047: A perspective for sustainable development of India. The Scientific Temper, 15(Special Issue–2), 53–58. https://doi.org/10.58414/SCIENTIFICTEMPER.2024.15.spl-2.10
6. Datt, R., & Mahajan, A. (2010). Indian economy (28th ed.). S. Chand & Company.
7. Government of Bihar. (2023). Economic survey of Bihar 2022–23. Finance Department, Government of Bihar.
8. Government of Jharkhand. (2023). Economic survey of Jharkhand 2022–23. Finance Department, Government of Jharkhand.
9. Hirschman, A. O. (1958). The strategy of economic development. Yale University Press.
10. Mundhe, E. (2024). *Viksit Bharat @2047: Pathways to a developed India*. In P. Chavan (Ed.), A pathways of Viksit Bharat @2047 (1st ed., Chap. 10, pp. 75–80). Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.11275372
11. Myrdal, G. (1968). Asian drama: An inquiry into the poverty of nations. Pantheon Books.
12. NITI Aayog. (2022). National multidimensional poverty index: A progress review 2022. Government of India.
13. NITI Aayog. (2024). SDG India Index & dashboard 2023–24. Government of India.

14. National Sample Survey Office. (2013). Household consumption expenditure survey (2011–12). Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.
15. UNDP. (2022). Human development report 2021–22. United Nations Development Programme.
16. World Bank. (2020). Poverty and shared prosperity 2020: Reversals of fortune. World Bank Publications.